

2. क्या भीम की बलावर बलशाली उल्लेख मिलता है। अर्थबाल

आत्मनः स्वभावान्तरात्के महत्त्वपूर्ण। स्वभाव की लाज्जी है और ईसा

3. 11.3 પાનની પુખ્તતાવાલી કે પાનના લામી 30-40% લોકો 'બ' કે 'ક' 30-40% અને

पाना जाता है। ईसवी सन की प्रारंभिक सदियों में इसे उत्तर-

મારતં કે ગ્રામિક ના ગ્રામીણો આરિ તૈલંગા ને મુગ્ધ બલ-

3. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{6}$

कदाचित् एका गावामध्ये एका मुलाचा एक दिवस होता.

જાહેર વિદ્યાર્થીનીઓના અંગત અને આર્થિક બાબતે સંસ્કાર કો અધિકાર ના

उत्तराधिकारी ज्ञानोपलब्धि - उत्तीर्ण के पक्षी

अन्य व्यक्ति को बना दें। लाधारंगर, यह ज़ाहिर है जाति-का

होता है। वैदिक काल से ही वह प्रभुत्व का नाशक बन गया।

अभिना ना | अतः वह लेखकता स्तत्रिहा ही होला ना | पर कभी-कभी

बैंगनी इस पक्ष का आकांक्षी होता ना और प्राप्त भी कर लेता ना

10/11/2020 10:11 AM

81. पद ५५ रूपांतरा ३। उसके वर्ण के प्रतिनिधि की वाकिकाल

1. निम्नलिखित के 'शब्दों' में स्थान मिलाना और जातक कथाओं में

4. उत्तरकालीन संस्कृत में धर्म के राजा के अनुसंधान की प्रतीति है।

ईसा की प्रथम सदी ईस्वी के उत्कर्ष लक्षों में वर्णित ग्राम

अधिकारियों ने उसका ह्यान लेवें प्रथम है।

1. The USA has a large number of people who are not very

(1) ଗାଁର ଶିଳ୍ପ କଳା କଳା - ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ଏ ମନସ୍ତତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରମୁଖ କଳା

ग्राम की रक्षा करने के लिए वह ग्राम की स्वयंसेवक बल और

ਪੰਛੇਕਾੜੀ ਭਾ ਗਾਧਕ ਵਾਟ | ਆਗ-ਭਲਾ ਭਾ ਅਪੇਖਾ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਲਾਭ

[illegible]

इस प्रकार के आचरण के संगत वारंवार होना चाहिए।

नहीं। मल खड़ी में। अब, प्रायणा (लगा) ही - अपना रजा लगाने की पद्धति।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नहीं होती थी।

11. अभिज्ञान शाकुन्तलम् - कालिदास

होता है। अतः यह कि- वह आम-वार्ता से आता-

पिता के समान व्यवहार करके के प्रति समझाने की बात ६५ जी.१६

1. संस्कृत भाषा में निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए।

1000

गणती है ही आदिमी ना और वह हित है रत्ना के लिए लका
होती है। यदि कि देकर रहता ना गणती है लिए भी वह उतगा ही आवश्यक ना
अतना राज के लिए ना।

3. कुल-विक्रम धनवी-अधिकार ७-→ ग्राम के कार्यालय ना
राज कर ही वसूली और ग्राम के कुल-विक्रम ना स्वामित्व
धनवी लगी लेवे-प्राप्त वे जाते ना सरकार और जिला
के अधिकारियों से होने वाले प्र-व्यवहार और ग्राम-पंचायत के
निर्णयों की भी प्रतिलिपि रखना जवली ना। यह सभी कार्य
गोव-ध-मुनिवि करता ना।

4. उत्तरभूमि स्वामित्व → ग्राम की उत्तर भूमि, अन्न उपगात्र गनी न
होती है। स्वामित्व प्रायः ग्राम-पंचायत कली भी। कुछ पंचायत द्वारा
ग्रामिणों की उदाहरण मिलते हैं।

5. कगड़ी का निपटारा करना ७-→ गोव-वाली की कगड़ी की
निपटारा ग्राम-पंचायत की बहुत महत्वपूर्ण कार्य ना।

कगड़ी आपराधी वाली कगड़ी का निपटारा स्वभावतः पंचायत
के बाहर ही होते ना क्योंकि इस तरह कगड़ी में प्राण-हानि हो
जाते ना। राजकीय न्यायलों के अभाव में पंचायतों की न्याय को
न अधिक कार्य-लोपा गयाना। पंचायतों के निर्णय के विषय
अपील की जा सकती ना, किन्तु इस की सफलता की आशा अत्यन्त
मन्द होती ना।

6. देवालयों का प्रवेश → कुछ गाँवों में देवालयों के प्रवेश-
के लिए उनकी अलग समिति होती ना। ~~जहाँ~~ जहाँ देवालय ना।
ग्राम-पंचायत ना उस की उप समिति देव-देव करती ना।
भेदियों में परम्परागत पूजा, अर्चना आदि की ले चिना तथा
सम्पत्ति का सुरक्षा ना हो।

सार्वजनिक हित की नोपनाएं कार्यन्वित
करने में ग्राम-पंचायतों को धर्म भी बड़ा सहानुभूति होता ना।
दूध, लोवर, अनायालय, लोपालय आदिका निर्माण-
स्मृति पुराणों ने पुण्य कार्य में शामिल किया ना। उत्तर मेकर
ग्राम के लोवर की लफाई के लिए को दानियों ने-निधियों
स्थापित की ना। पीने के जल के कुँडा खुदवाने के हेतु भी
एक संजान ने दान किया ना।

2. कार्य के लिए केन्द्रीय सरकार से भी
धन ना लागूगी की सहायता प्राप्त होती ना। बड़े-बड़े निर्माण
कार्य, अन्न स्वर्च स्थानीय स्तर पर उठा सकने में समर्थ ना
ना, राज्य के द्वारा किए जाते ना।

